अधिगम के साधन के रूप में पत्रिकाएँ

विनता विश्वनाथन और रुचि शेवड़े

बच्चों की पत्रिकाओं का संक्षिप्त इतिहास

बच्चों के लिए पत्र-पत्रिकाएँ छपने की शुरुआत 18वीं शताब्दी से ही हो चुकी थी। यह पत्रिकाएँ ज़्यादातर यूरोप और उत्तरी अमरीका में प्रकाशित होती थीं और इनकी विषयवस्तु हुआ करती थी, 'अच्छा' जीवन कैसे जिया जाए इससे सम्बन्धित नैतिक बातें एवं निर्देश। 19वीं शताब्दी में सामग्री की प्रकृति में बदलाव आया और उनमें कहानियाँ, लोक-कथाएँ और परी-कथाएँ शामिल की जाने लगीं। बच्चों की आधुनिक पत्रिकाएँ और कॉमिक्स 20वीं शताब्दी की शुरुआत में आए। समाज में बचपन की अवधारणा के उद्भव और इस क्षेत्र में सम्भावित लाभ को पहचानने के साथ-साथ बच्चों की पत्रिकाओं का भी विकास होता गया। भारत में 20वीं शताब्दी के आरम्भ में बच्चों की पत्रिकाएँ प्रकाशित होनी शुरू हुईं। बच्चों की प्रारम्भिक पत्रिकाओं में आनन्द (मराठी), सन्देश (बंगाली), बलराम (मलयालम) और चन्दामामा (तेलुगु और तमिल) थीं। भारत में 1970 के दशक के बाद से बच्चों की पत्रिकाओं ने अपने पैर जमाए।

भाषा सीखने में सहायता के लिए एक प्रिंट-समृद्ध वातावरण प्रदान करने की बात हो या अकादमिक हल्कों में अधिगम-संसाधनों पर चर्चा हो, पत्रिकाओं को हमेशा एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक साधन माना गया है। दुनिया भर में शिक्षकों के अनुभव इस विचार की पुष्टि करते हैं कि पत्रिकाएँ, यहाँ तक कि कॉमिक्स भी, कक्षा में अधिगम का शक्तिशाली साधन हो सकते हैं। लेकिन यह विचार काफ़ी हद तक सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है क्योंकि बच्चों की पत्रिकाओं, उनके उपयोग और प्रभाव के बारे में सुनियोजित अध्ययन बहुत कम हैं। वैसे तो पत्रिकाओं को अधिगम के साधन के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है लेकिन फिर भी कक्षा में सहायक सामग्री के रूप में उनका प्रयोग कम ही किया जाता है।

कक्षा की अधिगम-प्रक्रिया में बच्चों की पत्रिकाएँ किस प्रकार भूमिका निभा सकती हैं, इस बारे में हमने साहित्य का सर्वेक्षण किया और वहीं से एकत्रित जानकारी की चर्चा हमने इस लेख में की है। हमारी चर्चा में कई शिक्षकों के विवरणों का काफ़ी इस्तेमाल किया गया है। हम इस विषय पर भी बात करेंगे कि माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के लिए हिन्दी की बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' को पूरक सामग्री के रूप में कैसे प्रयोग में लाया गया है।

कक्षाओं में पत्रिकाओं का उपयोग क्यों करें?

किसी पत्रिका को उलट-पलटकर देखने से हमें उसमें छपे लेखों की सामग्री, चित्र और डिज़ाइन की समृद्धता और विविधता के बारे में पता चलता है। बच्चों की पत्रिकाओं में कल्पित कथाओं और गैर-कल्पित कथाओं (Fiction & Non-Fiction) का खज़ाना होता है जैसे कथाएँ, कविताएँ, कॉमिक स्ट्रिप्स, फुटकर समाचार(news snippets), आश्चर्यजनक तथ्य, विभिन्न प्रकार की पहेलियाँ, लेख, गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएँ। उनमें विविध प्रकार की और बोध के विभिन्न स्तरों के अनुरूप पढ़ने की सामग्री होती है। जानकारी भी अद्यतन और प्रासंगिक होती है क्योंकि पत्रिकाओं को नियमित और लघु अन्तराल पर प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका की सामग्री में एक बात समान है और वह है संक्षिप्तता- पत्रिका के लेखों की जानकारी संक्षिप्त होती है, अतः उन्हें आराम से पढ़ा जा सकता है। और पत्रिका को पढ़ने की सबसे अच्छी बात यह है कि आपको इसे पूरा पढ़ने की आवश्यकता नहीं है; आप केवल उन हिस्सों को पढ़ सकते हैं जिनमें आपकी रुचि हो।

कुछ पत्रिकाओं में किसी एक विषय (जैसे विज्ञान या पर्यावरण) पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिनमें ब्रेनवेव और नेशनल जियोग्राफ़िक किड्स शामिल हैं। कुछ अन्य पत्रिकाएँ जैसे चकमक, किशोर आदि अपने पाठकों के लिए व्यापक विषयों की पेशकश करते हैं। दोनों ही मामलों में, विद्यार्थियों को यह पत्रिकाएँ उपर्युक्त कारणों से आकर्षक लगती हैं और वे उनके साथ जुड़ते हैं। और इन्हीं कारणों से शिक्षकों को भी यह पत्रिकाएँ कक्षा की सहायक सामग्री के रूप में आकर्षित करती हैं। इसका एक और कारण यह भी है कि वे इन पत्रिकाओं की मदद से ऐसी पाठ-योजनाएँ बना सकते हैं जो कक्षा के एक या कुछ घण्टों के लिए उपयुक्त हों।

बच्चों की पत्रिकाएँ और पढ़ना-लिखना सीखना

इन पत्रिकाओं में कहानियों और कविताओं का समृद्ध संग्रह होता है, अतः भाषा की कक्षा में उन पर स्थायी रूप से निर्भर हुआ जा सकता है। इन कहानियों और लेखों की लम्बाई, जटिलता के स्तर, विषयों और शैली के आधार पर इनका उपयोग विभिन्न आयु-समूहों के लिए किया जा सकता है जैसे कहानी को ज़ोर से पढ़ना, सुनाना, समीक्षा, साहित्यिक चर्चा करना और थिएटर।

पढ़ना एक ऐसा कौशल है जिसका अभ्यास कविताओं की मदद से किया जा सकता है लेकिन इसके अप्रत्यक्ष (intangible) परिणाम भी हैं। कविताओं का रूप ही ऐसा होता है कि इन्हें कई बच्चे पसन्द करते हैं। जैसा कि प्रो. कृष्ण कुमार ने कहा है कि कविताएँ 'भाषा के अत्यधिक रचनात्मक और ऊर्जावान रूप की स्रोत हैं।' कविताएँ बच्चे को भाषा के साथ खेलने देती हैं। पत्रिकाओं में बच्चों के लिए कई तरह की कविताएँ होती हैं, लेकिन कविता की पारम्परिक पुस्तकों या पाठ्यपुस्तकों में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए, चकमक में हम केवल हिन्दी भाषा में लिखी गयी कविताएँ ही नहीं अन्य भाषाओं की भी कई कविताएँ छापते हैं जैसे कि अँग्रेज़ी और ईरानी भाषाओं की कविताओं का अनुवाद। बच्चों की पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ रचनाओं ने यह साबित किया है कि जितनी बार भी बच्चों के सामने इन्हें पढ़ा जाता है, हर बार ऊर्जा से भरी प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। चकमक के पहले अंक में प्रकाशित, 'आलू मिर्ची चाय जी' शीर्षक कविता (राजेश उत्साही द्वारा रचित) एक ऐसा ही उदाहरण है जो बहुत लोकप्रिय हुई। इस कविता को पिछले कई दशकों से कई सरकारी और निजी, दोनों तरह की पाठ्यपुस्तकों में लिया गया है।

पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने से अकसर थकान-सी महसूस होती है, लेकिन जब पत्रिकाएँ मनोरंजन के लिए पढ़ी जाती हैं तो उस थकान से राहत मिलती है। शायद आकर्षक आवरण और सामग्री की विविधता के कारण ही शिक्षकों का यह अनुभव रहा है कि कक्षाओं में इधर-उधर पड़ी पत्रिकाओं को एक अनिच्छुक पाठक भी उठाकर देखता है और ध्यान से पढ़ता है। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर भी यह बात लागू होती है। प्रिंट या मुद्रित सामग्री में दिलचस्पी लेने की दिशा में यह पहला क़दम है। कई बच्चे, विशेष रूप से शुरुआती कक्षाओं में, विभिन्न कारणों से किताबों से डरते हैं। उनमें से कुछ बच्चों का पाठ्यपुस्तकों या अन्य किताबों के साथ ज़्यादा वास्ता नहीं पड़ा होता है। अन्य बच्चे अपने सहपाठियों को आसानी से पढ़ते हुए देखते हैं लेकिन उन्हें इस बात का पक्का यकीन नहीं होता कि वे भी ऐसा कर सकते हैं। किन्तु एक बार जब यह बच्चे पत्रिका उठा लेते हैं तो फ़िर छपी हुई सामग्री उन्हें उतनी मुश्किल नहीं लगती। कुछ शिक्षकों ने अनुभव किया कि यदि शुरुआत से ही बच्चे को ऐसी प्रेरणा मिल जाती है तो आगे चल कर वे अच्छे पाठक बनते हैं।

पत्रिकाएँ, बच्चों को लिखने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। शिक्षकों ने महसूस किया कि पत्रिकाओं में पढ़ी हुई कहानियाँ और अन्य लेखों से उन्हें लिखने के लिए विचार मिलते हैं। वे लेखन के मॉडल के रूप में भी पत्रिकाओं के अंशों का उपयोग भी करते हैं। पत्रिकाएँ अकसर, पाठकों को सम्पादक के नाम पत्र लिखने और पुरस्कार पाने के लिए पहेलियों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

पूरक संसाधन के रूप में चकमक

एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा 1980 के दशक के मध्य में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए पूरक पठन-सामग्री के रूप में बच्चों की विज्ञान पत्रिका चकमक की शुरुआत की गई। मध्यप्रदेश के स्कूलों में चल रहे, एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम (होविशिका) के संचालकों के अनुभव से इस तरह की पत्रिका की आवश्यकता उभर कर सामने आई।

उन शुरुआती वर्षों में चकमक को होविशिका के कई ग्रामीण सरकारी स्कूलों में रियायती दरों पर बेचा गया था। बच्चे पत्रिका पढ़ना पसन्द करते थे और प्रश्न, कविता, कला, कहानियाँ और अपने अनुभव भेजते थे क्योंकि शुरुआत से ही इस पत्रिका में कई पृष्ठों को बच्चों के योगदान के लिए सुरक्षित कर दिया गया था, उस पन्ने का नाम है - मेरा पन्ना। कई वर्षों तक बाल-दिवस के उपलक्ष्य में, नवम्बर का अंक पूरी तरह से मेरा पन्ना अंक हुआ करता था।

इस तरह चकमक ने बच्चों की लेखन-कला और जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया और 'अच्छी' कला या 'उचित' लेखन के लिए जो पारम्परिक मानक तय थे, उनका उपयोग न करके बच्चों को कागज़ पर ख़ुद को व्यक्त करने में मदद की। चकमक में छपने के लिए बच्चे की रचनात्मकता और सोच तथा अपनी बात कहने की आवश्यकता ही काफ़ी थी। ऐसी कोई 'एक' हिन्दी नहीं थी जिसे स्वीकार्य माना जाता हो और भाषाओं और शैलियों की विविधता के साथ दख़लअन्दाज़ी नहीं की जाती थी। इस बात की केवल कल्पना ही की जा सकती है कि इस प्रकार के मौक़ों ने, इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों, जिनमें से कई पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी थे, के आत्मविश्वास पर क्या कुछ प्रभाव डाला होगा।

आज भी अकसर मेरा पन्ना पृष्ठ को बच्चे पत्रिका में सबसे पहले पढ़ते हैं। उनमें बच्चों के दैनिक जीवन की कई घटनाएँ हिन्दी के विभिन्न रूपों में लिखी होती हैं। एक समाज के रूप में, हम अभी भी बच्चे के घर की भाषा और बोली को औपचारिक स्थितियों में, यहाँ तक कि कक्षा में भी स्वीकार नहीं करते हैं, इस तथ्य के बावज़ूद कि इस तरह की स्वीकृति बच्चे को कक्षा की प्रक्रिया के साथ जुड़ने और स्कूली व्यवस्था में बने रहने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार मेरा पन्ना जैसी पहल बच्चों को उनकी स्वीकार्यता का आश्वासन, जिसकी बेहद ज़रूरत है, देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

चकमक के शुरुआती वर्षों में शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में पत्रिका के विभिन्न लेखों पर चर्चा की और 'अपनी प्रयोगशाला' कालम में बताई गई गतिविधियों को करने का प्रयास भी किया। उन्होंने चकमक की सम्पादकीय टीम को लगातार अपनी प्रतिक्रिया दी जिससे पत्रिका को शैक्षिक

साधन के रूप में प्रासंगिक और उपयोगी बनाए रखने में मदद मिली। कुछ वर्षों बाद चकमक में विज्ञान से सम्बन्धित सामग्री कम हो गई और इसके पाठकों में भी परिवर्तन हुआ – पहले इसे मुख्य रूप से हिन्दी माध्यम के, सरकारी स्कूलों के बच्चों द्वारा पढ़ा जाता था, लेकिन अब बड़ी संख्या में अँग्रेज़ी-माध्यम के निजी स्कूलों के बच्चे भी इसे पढ़ने लगे हैं। आज भी चकमक का उपयोग स्कूलों, पुस्तकालयों और विभिन्न संस्थाओं के गतिविधि केन्द्रों में किया जा रहा है, लेकिन मोटे तौर पर उन अन्तःक्रियात्मक स्तम्भों के लिए जिनमें बच्चे हमें लिखते हैं या हमें अपने चित्र आदि भेजते हैं।

'क्यों-क्यों' एक अन्य स्तम्भ है जिसे एक साल पहले शुरू किया गया था। इस स्तम्भ में हम बच्चों से उन सवालों के जवाब देने के लिए कहते हैं, जो विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होते हैं जैसे हम पादते क्यों हैं से लेकर ऐसे प्रश्न कि उनके विचार में 'कार्य' किसे माना जाता है और उनके परिवारों में किन-किनको इसके लिए पैसे मिलने चाहिए। इस प्रकार के प्रश्न भी पूछे जाते हैं जैसे एक खड़ी साइकिल गिरती क्यों है, उनके अनुसार में उनके परिवार में कौन-सा व्यक्ति ऐसा है जिसे सबसे अधिक स्वतंत्रता मिली हुई है और क्यों और यदि वे किसी को गायब करना चाहें तो वह कौन होगा और क्यों। इस तरह के प्रश्न बच्चों को अपने आस-पास की चीजों का अवलोकन करने, उन पर चिन्तन करने और विभिन्न दृष्टिकोणों से उनके उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं और यहीं से वैज्ञानिक और दार्शनिक जाँच-पड़ताल की शुरुआत होती है।

इसमें नेचर कंजर्वेशन फाउण्डेशन का एक स्तम्भ भी है जो बच्चों को बाहर जाने, अवलोकन करने और अपने प्राकृतिक परिवेश से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें दिए गए विषय, पशुओं या पौधों के समूहों (बन्दर, बाँस) और अवधारणाओं (नकल बनाना, हमारे आसपास की आवाज़ें) पर आधारित होते हैं। इन पर सीमित प्रतिक्रिया आती हैं, जो शायद इस बात को रेखांकित करती है कि हमें स्कूलों के साथ कार्य करना चाहिए ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूल अपने विद्यार्थियों से यह गतिविधियाँ करवाएँ और उन्हें प्रकृति के साथ बेहतर तरीक़े से जुड़ने में मदद कर सकें।

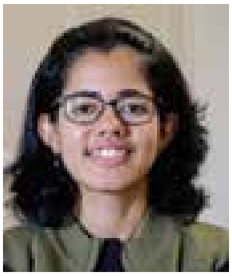
कुल मिलाकर चकमक की सामग्री अपने पाठकों के लिए आज दुनिया को देखने के लिए एक दर्पण का कार्य करती है, और साथ ही यह निश्चित रूप से हम वयस्कों के लिए एक ऐसी खिड़की है जिसमें से झाँककर हम बच्चों की दुनिया देख सकते हैं, यह जान सकते हैं कि वे क्या सोचते हैं, कौन-सी बात उन्हें परेशान करती है और वे अपने आसपास की दुनिया को कैसे देखते हैं।

अधिगम के साधन या स्रोत के रूप में चकमक जैसी बच्चों की पत्रिकाओं में बहुत सम्भावनाएँ हैं। लेकिन शिक्षण में सहायता के लिए उनका अधिक उपयोग नहीं किया गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अधिगम के अन्य अपरम्परागत साधन हैं जिनका उपयोग परम्परागत कक्षाओं में नहीं होता जैसे फिल्में, फिल्म के पोस्टर और विज्ञापन। आज जब हम विभिन्न प्रकार की अधिगम-सामग्री की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं और उसका समर्थन करते हैं, जब हम विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उनकी पसन्द की विविधता को स्वीकार करते हैं, तब हमें कक्षा में प्रयुक्त होने वाले अपने शैक्षणिक साधनों के संग्रह में पत्रिकाओं और ऐसे ही अन्य सभी प्रकार के साधनों को भी शामिल करना चाहिए।

इस लेख के लेखन में प्रयुक्त सन्दर्भों की सूची के लिए कृपया ruchi.shevade@gmail.com पर लिखें।



विनता विश्वनाथन चकमक की सम्पादक हैं। एक पारिस्थितिकीविद् के रूप में प्रशिक्षित विनता ने शोधकर्ता, शिक्षक और विज्ञान लेखक के रूप में कार्य किया है। उनसे vvinatha@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।



रुचि शेवड़े एकलव्य फाउण्डेशन, भोपाल की प्रकाशन टीम के साथ जुड़ी हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में एमए किया है। उनसे ruchi.shevade@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल